

॥ १० ॥ ११ ॥ इतिशान्ति० मो० नै० भा० षट्पंचाशदधिकत्रिशततमोऽध्यायः ॥ ३५६ ॥ ॥ ७३ ॥ सवनानीति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ विवासकरणं प्रवासकार  
ततः प्रभातसमये सोतिथिस्तेन पूजितः ॥ ब्राह्मणेन यथाशक्त्या स्वकार्यमभिकांक्षता ॥ १० ॥ ततः सविप्रः कृतकर्मनिश्चयः कृताभ्यनुज्ञः स्वजनेन धर्मकृत् ॥ य  
थोपदिष्टं भुजगेंद्रसंश्रयं जगाम काले सुकृतैकनिश्चयः ॥ ११ ॥ इति श्रीम० शां० मोक्ष० प० उच्छ्वस्त्युपाख्याने षट्पंचाशदधिकत्रिशततमोऽध्यायः ॥ ३५६ ॥  
भीष्म उवाच सवनानि विचित्राणि तीर्थानि च सरांसि च ॥ अभिगच्छन् क्रमेण स्मकंचिन्मुनिमुपस्थितः ॥ १ ॥ तंस तेन यथोद्दिष्टं नागं विप्रेण ब्राह्मणः ॥ पर्यपृ  
च्छद्यथान्यायं श्रुत्वैव च जगाम सः ॥ २ ॥ सो भिगम्य यथान्यायं नागायतनमर्थवित् ॥ प्रोक्तवानहमस्मीति भोः शब्दालं कृतं वचः ॥ ३ ॥ तत्तस्य वचनं श्रुत्वा रूपि  
णी धर्मवत्सला ॥ दर्शयामास तं विप्रं नागपत्नीपतिव्रता ॥ ४ ॥ सा तस्मै विधिवत् पूजां च क्रेधर्मपरायणा ॥ स्वागते नागतं कृत्वा किं करोमीति चाब्रवीत् ॥ ५ ॥ ब्राह्म  
ण उवाच विश्रांतो भ्यर्चितश्चास्मि भवत्याश्लक्ष्णया गिरा ॥ द्रष्टुमिच्छामि भवति देवं नागमनुत्तमं ॥ ६ ॥ एतद्विपरमं कार्यमेतन्मे परमेष्ठितं ॥ अनेन चार्थे  
नास्म्यद्यसंप्राप्तः पन्नगाश्रमं ॥ ७ ॥ नागभार्यो वाच आर्यः सूर्यरथं वोढुं गतोऽसौ मासचारिकः ॥ सप्ताष्टभिर्दिनैर्विप्रदर्शयिष्यत्यसंशयं ॥ ८ ॥ एतद्विदित  
मार्यस्य विवासकरणं तव ॥ भर्तुर्भवतु किंचान्यत् क्रियतां तद्वदस्वमे ॥ ९ ॥ ब्राह्मण उवाच अनेन निश्चयेनाहं साध्विसंप्राप्तवानिह ॥ प्रतीक्षन्नागमदेवि  
वत्स्याम्यस्मिन्महावने ॥ १० ॥ संप्राप्तस्यैव चाव्यग्रमावेद्यो हि मिहागतः ॥ ममाभिममनं प्राप्नोवाच्यश्च वचनं त्वया ॥ ११ ॥ अहमप्यत्र वत्स्यामि गोमत्याः  
पुलिने शुभे ॥ कालं परिमिताहारो यथोक्तं परिपालयन् ॥ १२ ॥ ततः सविप्रस्तां नागीं समाधाय पुनः ॥ तदेव पुलिनं नद्याः प्रययौ ब्राह्मणर्षभः ॥ १३ ॥ इति  
श्रीम० शां० मोक्ष० प० उच्छ्वस्त्युपाख्याने सप्तपंचाशदधिकत्रिशततमोऽध्यायः ॥ ३५७ ॥ ॥ ७४ ॥ भीष्म उवाच अथ तेन नरश्रेष्ठ ब्राह्मणेन तपस्वि  
ना ॥ निराहारेण वसता दुःखितास्ते भुजंगमाः ॥ १ ॥ सर्वे संभूय सहिता ल्यस्य नागस्य बांधवाः ॥ भ्रातरस्तनया भार्या ययुस्तं ब्राह्मणं प्रति ॥ २ ॥ तेष्वन्यपुलिने तं  
वे विविक्ते नियतव्रतं ॥ समासीनं निराहारं द्विजं जप्यपरायणं ॥ ३ ॥ ते सर्वे समतिक्रम्य विप्रमभ्यर्च्य वासकृत् ॥ ऊचुर्वाक्यमसंदिग्धमातिथेयस्य बांधवाः ॥ ४ ॥  
षष्ठो हि दिवस स्तेऽद्य प्राप्तस्येह तपोधन ॥ न चाभिभाषसे किंचिदाहारं धर्मवत्सल ॥ ५ ॥

\* संश्रयं गृहं

अथेति ॥ ११ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

इतिशान्ति० मो० नै० भा० सप्तपंचाशदधिकत्रिशततमोऽध्यायः ॥ ३५७ ॥ ॥ ७४ ॥ अथेति ॥ ११ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

इतिशान्ति० मो० नै० भा० सप्तपंचाशदधिकत्रिशततमोऽध्यायः ॥ ३५७ ॥ ॥ ७४ ॥ अथेति ॥ ११ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥